वैदिक साहित्य एवं संस्कृति

(वैदिक साहित्य का इतिहास)

लेखक

पद्मश्री डॉ० कपिलदेव द्विवेदी आचार्य

एम०ए० (संस्कृत, हिन्दी), एम०ओ०एल०, डी०फिल्० (प्रयाग),
पी०ई०एस० (अ०प्रा०), विद्याभास्कर, साहित्यरत्न, व्याकरणाचार्य

निदेशक

विश्वभारती अनुसंधान परिषद्

ज्ञानपुर (भदोही)

प्रणेता—अर्थविज्ञान और व्याकरणदर्शन, अथर्ववेद का सांस्कृतिक अध्ययन,
वेदों में विज्ञान, वेदों में आयुर्वेद, भक्ति कुसुमांजलिः, राष्ट्र-गीताञ्जलीः,
आत्मविज्ञानम्, संस्कृत निबन्ध-शतकम्, संस्कृत-व्याकरण,
(सभी उ०प्र० शासन द्वारा पुरस्कृत) भाषा-विज्ञान एवं भाषा-शास्त्र,
वैदिक साहित्य एवं संस्कृति, साधना और सिद्धि आदि।

विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

विषय -सूची

(सूचना - अंक पृष्ठबोधक हैं)

अध्याय १

प्रस्तावना १-४३

वेद का अर्थ १, श्रुति, निगम, आगम, त्रयी, छन्दस्, आम्नाय, स्वाध्याय २, वेदों का महत्त्व ३, वैदिक साहित्य का विभाजन ७, वेदों के संरक्षण के उपाय (अष्ट-विकृतियाँ) ८, वैदिक वाङ्मय-सारणी ९, वेदों के उपवेद १०, वेद अपौरुषेय हैं या पौरुषेय ११, मंत्र सार्थक हैं या निरर्थक १४, वेदों की विभिन्न व्याख्या - पद्धतियाँ १६, वेद और भारतीय विद्वान् २१, प्राचीन आचार्य २१, पदपाठकार २२, प्राचीन वेदभाष्यकार २२, शुक्ल यजुर्वेद संहिता-भाष्य २४, कृष्ण यजुर्वेद संहिता-भाष्य २५, सामवेद संहिता-भाष्य २५, अथर्ववेद संहिता-भाष्य २६, ब्राह्मणग्रन्थों के भाष्य २६, वेद और भारतीय आचार्य २७, वेद और पाश्चात्त्य विद्वान् ३२, वेदों का रचनाकाल ३८ ।

वैदिक साहित्य-समीक्षा

अध्याय २

वैदिक संहिताएँ ४४-१११

(क) ऋग्वेद संहिता : ऋक् का अर्थ ४४, ऋक् आदि की दार्शनिक व्याख्या ४४, वेदों के प्रतिनिधि होता आदि ४५, ऋग्वेद का महत्त्व ४५, ऋग्वेद की शाखाएँ ४६, ऋग्वेद का विभाजन ४६, मंत्रद्रष्टा ऋषि ४७, मंत्रद्रष्टा ऋषिकाएँ ४८, ऋग्वेद में छन्दोविधान ४८, ऋग्वेद का मौलिक अंश ४९, वेदों का विभाजन ५०, ऋग्वेद-संकलन के कुछ नीतितत्त्व ५१, ऋग्वेद का वर्ण्य-विषय ५२, ऋग्वेद के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्त ५३, आख्यान एवं संवाद-सूक्त ५६, विशिष्ट आख्यान-सूक्तों का विवरण ५७, विशिष्ट संवाद-सूक्तों का विवरण ५८, आख्यान-समीक्षा ५९, वैदिक खिलसूक्तों की समीक्षा ६१, विशिष्ट खिल सूक्त ६२ ।

(ख) यजुर्वेद संहिता : यजुष् का अर्थ ६३, यजुर्वेद की शाखाएँ ६४, शुक्ल यजुर्वेद ६५, काण्व संहिता ६५, शुक्ल यजुर्वेद की विषय-वस्तु ६६, कृष्ण यजुर्वेद ६८, तैत्तिरीय संहिता ६८, मैत्रायणी संहिता ६९, काठक संहिता ६९, कपिष्ठल-कठ संहिता ७०, अश्वमेध आदि याग ७१, विविध ७२, यजुर्वेद के महत्त्वपूर्ण अध्याय ७३, यजुर्वेद के अतिमहत्त्वपूर्ण मंत्र ७६ ।

(ग) सामवेद संहिता : सामन् का अर्थ ७७, सामवेद का दार्शनिक और आध्यात्मिक रूप ७८, सामवेद का महत्त्व ७९, सामवेद का स्वरूप ८०, सामवेद मंत्र संख्या -विचार ८१,

सामवेद की स्वतंत्र सत्ता ८१, सामवेद की शाखाएँ ८३, कौथुमीय शाखा ८४, राणायनीय शाखा ८५, जैमिनीय शाखा ८५, सामवेद का प्रतिपाद्य विषय ८६, सामवेदीय संगीत ८७, स्वर ८७, ग्राम, तान आदि ८७, सामविकार ८८, स्तोभ ८८, पूर्वगान और उत्तरगान ८८, सामगान के चार भेद ८९, शस्त्र, स्तोत्र, स्तोम और विष्टुति ९०, सामगान ९१, सामगान की पाँच भक्तियाँ ९२, तीन मूल स्वर ९३, सामवेदीय स्वरों का विकास ९४ ।

(घ) अथर्ववेद संहिता : अथर्वन् का अर्थ ९५, अथर्ववेद का दार्शनिक और आध्यात्मिक रूप ९५, अथर्ववेद का महत्त्व ९६, अथर्ववेद के विविध नाम ९७, अथर्ववेद की शाखाएँ ९८, शौनकीय शाखा ९९, पैप्पलाद शाखा ९९, अथर्ववेद के ५ उपवेद ९९, अथर्ववेद का संकलन-वैशिष्ट्य १००, अथर्ववेद का प्रतिपाद्य विषय १०१, वेदत्रयी और वेद-चतुष्टयी १०२, अथर्वन् महान् वैज्ञानिक एवं दार्शनिक १०३, अथर्ववेद संक्षिप्त विश्वकोश १०४, अथर्ववेद का रचनाकाल १०६, अथर्ववेद के कुछ महत्त्वपूर्ण सूक्त १०९ ।

अध्याय ३

ब्राह्मण ग्रन्थ ११२-१५५

ब्राह्मण का अर्थ ११२, ब्राह्मण और अनुब्राह्मण ११३, मंत्र और ब्राह्मण ११३, संहिता और ब्राह्मणों का भेद ११४, ब्राह्मणों की भाषा और शैली ११४, ऋषि और आचार्य में भेद ११४, ब्राह्मणग्रन्थों का प्रतिपाद्य विषय ११५, ब्राह्मणग्रन्थों का शास्त्रीय महत्त्व ११७, ब्राह्मणग्रन्थों का वर्गीकरण ११८, प्राचीन और नवीन ब्राह्मण ११९ ।

ऋग्वेदीय ब्राह्मण : ऐतरेय ब्राह्मण १२०, ऐतरेय ब्राह्मण के रचयिता १२०, ऐतरेय ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय १२०, ऐतरेय ब्राह्मण का महत्त्व १२१, विविध शासन-प्रणाली १२२, चक्रवर्ती महाराज १२४, शुन:शेप आख्यान १२५, शांखायन (कौषीतकि) ब्राह्मण १२६, शांखायन ब्राह्मण के रचयिता १२६, शांखायन ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय १२७, ऐतरेय और कौषीतकि ब्राह्मणों की तुलना १२७, शांखायन ब्राह्मण के कुछ विशिष्ट संदर्भ १२९ ।

यजुर्वेदीय ब्राह्मण (शुक्ल यजुर्वेद) : शतपथ ब्राह्मण १३०, शतपथ ब्राह्मण के रचयिता १३०, शतपथ ब्राह्मण (माध्यन्दिन) का प्रतिपाद्य विषय १३१, शतपथ ब्राह्मण (काण्व) का प्रतिपाद्य विषय १३२, शतपथ ब्राह्मण का रचनाकाल १३३, शतपथ ब्राह्मण का वैशिष्ट्य १३३ ।

यजुर्वेदीय ब्राह्मण (कृष्ण यजुर्वेद) : तैत्तिरीय ब्राह्मण १३६, तैत्तिरीय ब्राह्मण के रचयिता १३६, तैत्तिरीय ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय १३६, तैत्तिरीय ब्राह्मण के विशिष्ट प्रसंग १३७, बारह सव १३७, क्रतु, सत्र १३७, नाचिकेत अग्नि १३८, नारी-गौरव १३८, गवामयन १३९ ।

सामवेदीय ब्राह्मण : तांड्य महाब्राह्मण १४०, तांड्य ब्राह्मण के रचयिता १४१,

तांड्य ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय १४१, तांड्य ब्राह्मण की प्रमुख विशेषताएँ १४२, सोमयाग १४२, सामगान की प्रक्रिया १४२, व्रात्य यज्ञ १४२, षड्विंश ब्राह्मण १४३, सामविधान ब्राह्मण १४३, आर्षेय ब्राह्मण १४४, देवताध्याय ब्राह्मण १४५, उपनिषद् ब्राह्मण १४६, मंत्र ब्राह्मण १४६, छान्दोग्य उपनिषद् १४६, संहितोपनिषद् ब्राह्मण १४७, वंश ब्राह्मण १४८, जैमिनीय ब्राह्मण १४८, जैमिनीय ब्राह्मण के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ १४९, जैमिनीय आर्षेय ब्राह्मण १५०, जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण १५०, जैमिनीय उपनिषद् ब्राह्मण के प्रमुख सन्दर्भ १५१ ।

अथर्ववेदीय ब्राह्मण : गोपथ ब्राह्मण १५१, गोपथ ब्राह्मण का नामकरण १५१, गोपथ ब्राह्मण का प्रतिपाद्य विषय १५२, गोपथ ब्राह्मण का समय १५२, गोपथ ब्राह्मण के प्रमुख सन्दर्भ १५३ ।

अध्याय ४

आरण्यक ग्रन्थ १५६-१६६

आरण्यक ग्रन्थों का उद्भव १५६, आरण्यक का अर्थ १५६, आरण्यकों का महत्त्व १५६, आरण्यकों का प्रतिपाद्य विषय १५८, आरण्यकों के रचयिता १६०, उपलब्ध आरण्यक ग्रन्थ १६०, ऐतरेय आरण्यक १६१, ऐतरेय आरण्यक के विशिष्ट सन्दर्भ १६१, शांखायन आरण्यक १६२, शांखायन आरण्यक के विशिष्ट सन्दर्भ १६३, बृहदारण्यक १६३, तैत्तिरीय आरण्यक १६३, तैत्तिरीय आरण्यक के विशिष्ट सन्दर्भ १६४, मैत्रायणीय आरण्यक १६५, मैत्रायणीय आरण्यक के विशिष्ट सन्दर्भ १६५, तलवकार आरण्यक १६६, तलवकार के प्रमुख सन्दर्भ १६६ ।

अध्याय ५

उपनिषद् ग्रन्थ १६७-१८८

उपनिषद् का अर्थ १६७, उपनिषदों की संख्या १६७, उपनिषदों का वेदानुसार वर्गीकरण १६८, उपनिषदों का विषयानुसार वर्गीकरण १६८, उपनिषदों का रचनाकाल १६९, उपनिषदों के प्राचीन भाष्य एवं अनुवाद १६९, उपनिषदों में दार्शनिक विवेचन १७० ।

तैत्तिरीय -प्रातिशाख्य १९८, सामवेदीय-प्रातिशाख्य १९८, पुष्पसूत्र १९८, ऋक्तंत्र १९८, अथर्ववेदीय -प्रातिशाख्य १९९, शौनकीय-चतुरध्यायिका १९९, अथर्ववेद-प्रातिशाख्य १९९ ।

प्रमुख उपनिषदों का संक्षिप्त विवरण १७४, ईश उपनिषद् १७४, केन उपनिषद् १७५, कठ उपनिषद् १७५, कठ उपनिषद् में दार्शनिक महत्त्व के संदर्भ १७६, प्रश्न उपनिषद् १७७, मुण्डक उपनिषद् १७७, मुण्डक उपनिषद् के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ १७८, माडूक्य उपनिषद् १७९, तैत्तिरीय उपनिषद् १७९, तैत्तिरीय उपनिषद् के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ १७९, ऐतरेय उपनिषद् १८०, छान्दोग्य उपनिषद् १८१, छान्दोग्य उपनिषद् के विशिष्ट सन्दर्भ १८२,

बृहदारण्यक उपनिषद् १८३, बृहदारण्यक के विशिष्ट सन्दर्भ १८४, श्वेताश्वतर उपनिषद् १८५, श्वेताश्वतर के महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ १८६, कौषीतकि उपनिषद् १८७, कौषीतकि के महत्त्वपूर्ण संदर्भ १८७, मैत्रायणी (मैत्री) उपनिषद् १८८, मैत्रायणी के विशिष्ट संदर्भ १८८।

अध्याय ६

वेदाङ्ग १८९-२४७

वेदाङ्ग का अर्थ १८९, वेदांगों का महत्त्व १८९, वेदांगों की संख्या और उनके नाम १९०,

(१) शिक्षा : शिक्षा १९०, पाठक के गुण १९२, पाठक के दोष १९२, शिक्षा-ग्रन्थ १९२, विशेष उल्लेखनीय शिक्षा-ग्रन्थ १९२ ।

(२ क) व्याकरण : व्याकरण का अर्थ १९३, संस्कृत व्याकरण १९३, व्याकरण का अर्थ १९३, व्याकरण का दार्शनिक रूप १९४, व्याकरण के उद्देश्य १९४, ब्राह्मणग्रन्थों में व्याकरण १९५, पाणिनि से पूर्वर्ती वैयाकरण १९५, आचार्य पाणिनि एवं परवर्ती आचार्य १९५ ।

(२ ख) वैदिक व्याकरण १९७, प्रातिशाख्य ग्रन्थ १९७, प्रातिशाख्यों का महत्त्व १९७, ऋक्-प्रातिशाख्य १९७, शुक्ल यजुःप्रातिशाख्य १९७, प्रतिज्ञासूत्र १९८, भाषिकसूत्र १९८ ।

तैत्तिरीय-प्रातिशाख्य १९८, सामवेदीय-प्रातिशाख्य १९८, पुष्पसूत्र १९८, ऋक्तंत्र १९८, अथर्ववेदीय-प्रातिशाख्य १९९, शौनकीय-चतुरध्यायिका १९९, अथर्ववेद-प्रातिशाख्य १९९ ।

(३) छन्दःशास्त्र १९९, छन्द का अर्थ १९९, छन्दोविषयक ग्रन्थ १९९, छन्दों का महत्त्व २००, ऋग्वेद में छन्दोविधान २००, छन्दोविषयक ज्ञातव्य बातें २००, छन्दोविषयक कुछ सामान्य नियम २०१, कतिपय मुख्य छन्द २०१ ।

(४) निरुक्त २०३, निरुक्त का अर्थ २०३, निरुक्त का महत्त्व २०४, यास्क का निरुक्त २०४, यास्क के पूर्ववर्ती निरुक्तकार २०५, यास्क निरुक्तकार २०५, निरुक्त के टीकाकार २०५, निरुक्त का भाषाशास्त्रीय महत्त्व २०६ ।

(५) ज्योतिष २०७, ज्योतिष का अर्थ २०७, ज्योतिष का महत्त्व २०८, लगध का वेदांग-ज्योतिष २०८, वेदांग-ज्योतिष का समय २०९, वेदांग-ज्योतिष के वर्ण्य-विषय २०९, काल-विभाजन २०९, २७ नक्षत्रों के नाम २१०, ज्योतिष-संबन्धी महत्त्वपूर्ण तथ्य २१० ।

(६) कल्पसूत्र : कल्प का अर्थ २१३, कल्पसूत्रों के भेद २१४, कल्पसूत्रों का महत्त्व २१४, श्रौतसूत्रों का वेदानुसार वर्गीकरण २१५,

(६ क) ऋग्वेदीय श्रौतसूत्र : आश्वलायन श्रौतसूत्र २१६, शांखायन श्रौतसूत्र २१६, शुक्ल यजुर्वेदीय - कात्यायन श्रौतसूत्र २१६, कृष्ण यजुर्वेदीय - बौधायन श्रौतसूत्र २१७, आपस्तम्ब श्रौतसूत्र २१७, सत्याषाढ (हिरण्यकेशी) श्रौतसूत्र २१८, वैखानस श्रौतसूत्र २१८, भारद्वाज २१८, वाधूल २१८, वाराह २१९, मानव श्रौतसूत्र २१९ ।

सामवेदीय श्रौतसूत्र : आर्षेय कल्प या मशक कल्पसूत्र २१९, क्षुद्रकल्पसूत्र २२१, लाट्यायन श्रौतसूत्र २२२, द्राह्यायण श्रौतसूत्र २२३, जैमिनीय श्रौतसूत्र २२३, कल्पानुपदसूत्र २२४,

उपग्रन्थ सूत्र २२४, अनुपदसूत्र २२४, निदानसूत्र २२४ ।

अथर्ववेदीय : वैतान श्रौतसूत्र २२५ ।

(६ ख) गृह्यसूत्र : गृह्यसूत्रों का महत्त्व २२६, ऋग्वेदीय गृह्यसूत्र - आश्वलायन २२७, शांखायन २२७, कौषीतकि २२८, शुक्लयजुर्वेदीय - पारस्कर २२८, बैजवाप २२८, कृष्ण यजुर्वेदीय - बौधायन २२९, मानव २२९, भारद्वाज २२९, आपस्तम्ब २३०, काठक २३०, अग्निवेश्य २३१, हिरण्यकेशी २३१, वाराह २३१, वैखानस २३२, सामवेदीय-गोभिल २३२, खादिर २३३, द्राह्यायण २३३, जैमिनीय २३३, कौथुम २३३ ।

अथर्ववेदीय - कौशिक सूत्र २३३ ।

(६ ग) धर्मसूत्र : धर्मसूत्रों का महत्त्व : २३५, गौतम २३६, बौधायन २३६, आपस्तम्ब २३७, वासिष्ठ २३७, वैखानस २३७, विष्णु २३८, हारीत २३८, हिरण्यकेशी २३८, शंखलिखित २३८ ।

(६ घ) शुल्बसूत्र : शुल्बसूत्रों का महत्त्व २३८, शुल्ब २३९, यज्ञवेदी २३९, बौधायन शुल्बसूत्र २४०, आपस्तम्ब २४०, कात्यायन २४१, मानव शुल्ब २४१, शुल्बसूत्रों में वर्णित वेदियाँ २४२, महावेदी २४३, कर्ण निकालने की विधि २४४ ।

अनुक्रमणियाँ : २४५, शौनकीय पाँच अनुक्रमणियाँ २४५, ऋग्विधान २४६, बृहद्देवता २४६, सर्वानुक्रमणी २४६, ऋग्वेदानुक्रमणी २४६, शुक्ल यजुर्वेद सामवेद और अथर्ववेद की अनुक्रमणियाँ २४६, चरणव्यूहसूत्र २४७, नीतिमंजरी २४७ ।

वैदिक संस्कृति

अध्याय ७

भूगोल एवं सामाजिक जीवन २४८-२७०

(क) भूगोल : राष्ट्र और देश २४८, विविध भूखंड या द्वीप २४८, पर्वत २४९, समुद्र २५०, नदियाँ २५०, जनपद एवं स्थान नाम २५२ ।

(ख) सामाजिक जीवन : वर्णव्यवस्था २५६, आश्रम-व्यवस्था २५७, वेदों में नारी का गौरव २५९, विवाह २६१, स्वयंवर २६१, विधवाविवाह २६२, शिक्षापद्धति २६२, शिक्षा का उद्देश्य २६२, शिक्षा के विषय २६३, अन्न-पान २६३, वस्त्र और परिधान २६४, आभूषण २६६, गृह-निर्माण २६७, नगर और ग्राम २६८, शयनासन (फर्नीचर) और पात्र २६९, यातायात के साधन २७० ।

अध्याय ८

आर्थिक और राजनीतिक जीवन २७१-२९३

(क) वैदिक अर्थव्यवस्था

कृषि : कृषि २७१, कृषि का आविष्कारक राजा पृथु २७१, भूमि के भेद २७२, मिट्टी के भेद २७२, सिंचाई के साधन २७२, सस्य या फसलें २७२, अन्नों के नाम २७२, खाद २७३,

कृषिनाशक तत्त्व २७३ ।

पशुपालन : पशुपालन २७३, गोशाला २७४, पशुसंवर्धन २७४, गोमहिमा २७४, पशुहत्या का निषेध २७५, पशुसंपदा की उपयोगिता २७५ ।

विभिन्न उद्योग : विभिन्न उद्योग २७६, वस्त्र-उद्योग २७६, रथकार २७६, कर्मार २७७, यान्त्रिक २७७, हिरण्यकार २७७, मणिकार २७७, चीनी उद्योग २७८, भिषक् २७८, नक्षत्रदर्श २७८, कलात्मक वृत्तियाँ, २७९, वणिक् २७९, द्यूत २७९ ।

व्यापार और वाणिज्य : वस्तु-विनिमय और मूल्य २७९, मूल्य-निर्धारण २८०, व्यापार के कुछ गुर २८०, स्थल व्यापार २८०, समुद्री व्यापार २८१, आकाशीय मार्ग २८१ ।

मुद्राएँ : निष्क २८२, रुक्म २८२, शतमान, कृष्णल २८२, कार्षापण या पण २८२ ।

ऋणदान और ब्याज २८३ ।

(ख) वैदिक राजनीतिक अवस्था

राष्ट्र और देश २८३, वैदिक आदर्श २८४, ग्राम, विश् और जन २८४, राजा का निर्वाचन २८४, राज्याभिषेक २८५, शपथ-ग्रहण २८५, राजा के कर्तव्य २८५, राजा और राजकृत् २८६ ।

विविध शासन-प्रणालियाँ : साम्राज्य २८७, भौज्य २८७, स्वाराज्य २८७, वैराज्य २८७, पारमेष्ठ्य २८७, राज्य २८७, माहाराज्य २८७, आधिपत्य २८८, सार्वभौम २८८, जनराज्य २८८, अधिराज्य २८८, विप्रराज्य २८८, समर्यराज्य २८९ ।

मंत्रिमण्डल : राजकृतः, रत्नी २८९ ।

सभा और समिति : सभा का स्वरूप २९०, सभा का कार्य २९०, समिति का स्वरूप २९१, समिति के कार्य २९१ ।

अर्थव्यवस्था और कर-संग्रह : कोष का महत्त्व २९१, कर के दो रूप २९२, बलि २९२, शुल्क (चुंगी) २९२ ।

विविध शस्त्रास्त्र : दिव्य अस्त्र २९३, मानवीय शस्त्र और अस्त्र २९३ ।

अध्याय ९

वैदिक देवों का स्वरूप २९४-३०८

देवता किसे कहते हैं : २९४, देवों का स्वरूप २९४, देवों की संख्या २९५, एकेश्वरवाद २९६, वैदिक देवों का वर्गीकरण २९६ ।

प्रमुख देवों का परिचय : अग्नि २९७, इन्द्र २९८, विष्णु २९९, सोम ३००, वरुण ३०१, अश्विनौ ३०२, रुद्र ३०३, वृक्ष-वनस्पति शिव के मूर्तरूप ३०४, मरुत् ३०४, सविता, सूर्य ३०५, उषस् ३०६,पर्जन्य ३०६, मित्र ३०७, पूषन् ३०७, बृहस्पति ३०८ ।

अध्याय १०

वैदिक यज्ञ-मीमांसा ३०९-३१८

यज्ञ का महत्त्व ३०९, यज्ञ का आध्यात्मिक महत्त्व ३१०, यज्ञ की उपयोगिता ३१०, यज्ञ और यज्ञवेदियाँ ३११, यज्ञिय धूम और मेघनिर्माण ३१२, यज्ञों में पशुबलि निषिद्ध ३१२।

विविध यागोंका परिचय : अथर्वा ऋषि यज्ञ का प्रवर्तक ३१३, यागों की संख्या ३१३, हविर्याग ३१४, अग्निहोत्र ३१४, दर्श-पूर्णमास ३१४, आग्रयण इष्टि ३१४, चातुर्मास्य ३१४, पशुबन्ध ३१४, सौत्रामणी याग ३१४, पितृयज्ञ ३१५।

सोमयाग - ३१५, अग्निष्टोम ३१५, उक्थ ३१५, षोडशी ३१५, अतिरात्र ३१६, ज्योतिष्टोम ३१६, अत्यग्निष्टोम ३१६, वाजपेय ३१६, अप्तोर्याम ३१६, राजसूय ३१६, अश्वमेध ३१६, व्रात्यस्तोम ३१६, अभिचार यज्ञ ३१७, पंच महायज्ञ ३१७, यज्ञ के पंचांग ३१७।

परिशिष्ट

अध्याय ११

वैदिक व्याकरण, स्वरप्रक्रिया, पदपाठ ३१९-३३०

वैदिक व्याकरण

संधि-विचार ३१९, शब्दरूप-विचार ३२०, उपसर्ग एवं अव्यय ३२१, धातुरूप-विचार ३२१, समास-विचार ३२२, तद्धित प्रत्यय ३२२, कृत् प्रत्यय (तुमुन्) ३२२, कृत्य प्रत्यय ३२३, कृत् प्रत्यय (क्त्वा, ल्यप्) ३२३, अ, आ-रहित भूतकाल ३२३।

संहितापाठ से पदपाठ बनाना ३२४, पदपाठ में अवग्रह चिह्न लगाना ३२४, पदपाठ में इति का प्रयोग ३२५, पदपाठ से संहितापाठ बनाना ३२६, स्वर-संबन्धी विशिष्ट नियम ३२६, उदात्त स्वर वाले स्थान ३२७, अनुदात्त स्वर ३२८, स्वरित स्वर ३२८, प्रश्लेष, क्षैप्र, अभिनिहित संधि ३२९, स्वतंत्र स्वरित ३२९, पदपाठ में स्वर-चिह्न लगाना ३२९।

अध्याय १२

वेदों में विज्ञान के सूत्र ३३१-३४१

सूर्य न उदय होता है न अस्त ३३१, पृथिवी सूर्य की प्रदक्षिणा करती है ३३१, सूर्य और संसार घूमता है ३३१, सूर्य से चन्द्रमा में प्रकाश ३३१, सूर्य संसार की आत्मा ३३२, सूर्य अनेक हैं ३३२, सात महासूर्य ३३२, सूर्य में धब्बे ३३२, सूर्य के चारों ओर गैस ३३२, सूर्य की किरणें सात रंग की ३३२, सूर्य की किरणें पदार्थों को रंग देती हैं ३३२, सूर्य में सोम ३३२, सूर्य की किरणों से विद्युत्-प्रवाह ३३३, सौर ऊर्जा ३३३, सूर्य में आकर्षण-शक्ति ३३३,

सूर्य के आकर्षण से पृथिवी रुकी है ३३३, परमाणुओं में आकर्षण शक्ति ३३४, द्रव्य और ऊर्जा का रूपान्तरण ३३४, अग्नि और सोम से विश्व की रचना ३३४, ऊर्जा विश्वव्यापी है ३३४, ऊर्जा के विभिन्न रूप ३३५, ऊर्जा अविनाशी है ३३५, ऊर्जा के विविध स्रोत ३३५, अथर्वन् ऋषि के तीन आविष्कार ३३५, अरणिमन्थन से अग्नि ३३५, जल-मन्थन से अग्नि ३३५, भूगर्भीय अग्नि ३३५, मरुतों में चुम्बकीय शक्ति ३३६, एवयामरुत् ३३६, ओजोन परत ३३६, जल का सूत्र ३३६, वृक्षों में अवितत्त्व ३३७, वृक्ष शिव के मूर्तरूप ३३७, वृक्षों में चेतन तत्त्व ३३७, पर्यावरण के संघटक तत्त्व ३३७, द्यु-भू और अन्तरिक्ष को क्षति न पहुँचावो ३३७, द्यु-भू माता-पिता ३३८, वृक्षों को न काटें ३३८, वृक्ष लगावें ३३८, जल को प्रदूषण से बचावें ३३८, वायु में अमृत ३३८, सूर्यकिरणें हृदयरोग-नाशक ३३८, जलचिकित्सा ३३८, हस्तस्पर्शचिकित्सा ३३९ ।

शीतगृह ३३९, विशाल भवन ३३९, एक हजार द्वार वाला भवन ३३९, लोहनिर्मित नगर ३३९, विविध यन्त्र ३३९, विशाल पोत ३३९, समुद्र के अन्दर और अन्तरिक्ष में चलने वाला यान ३४०, स्वचालित यान ३४०, द्यु-भू में चलने वाला यान ३४०, मनोवेग यान ३४०, तीन अंग वाला विमान ३४०, विषुवत् रेखा, उत्तरायण, दक्षिणायन ३४०, पृथिवी की सात परतें ३४०, पृथिवी की उत्पत्ति सूर्य से ३४१, भूगर्भ में अग्नि ३४१, भूगर्भीय अग्नि से पृथिवी घूमती है ३४१, धन के प्राकृतिक संसाधन ३४१, पर्वतों में धन ३४१, समुद्र में निधि ३४१ ।

अध्याय १३

वेदों में काव्य-सौन्दर्य और ललित कलाएँ ३४२-३४९

शब्दालंकार ३४२, अर्थालंकार ३४३, रस-निरूपण ३४३, शृंगार रस से संबद्ध सूक्त ३४४, वीररस से संबद्ध सूक्त ३४४, हास्य रस ३४४, अद्भुत रस ३४४, भयानक रस ३४४, रौद्र और बीभत्स रस ३४४, वात्सल्य रस ३४४, अलंकारों का प्रयोग ३४४, छन्दों का प्रयोग ३४४, भाव-सौन्दर्य ३४४, काव्य-सौन्दर्य ३४५, भावगाम्भीर्य और अर्थगौरव ३४५, प्रश्नोत्तर ३४६, ललित कलाएँ ३४६, शिल्प ३४६, नृत्य और नृत्त ३४७, संगीत ३४८, वाद्य ३४८ ।